Gk – जैसे-जैसे समय निकट आया, यीशु निश्चयपूर्वक यरूशलेम के
लिए निकले लूका ९:५१-५६ और यूहन्ना ७:१० | 1

– Save This Page as a PDF–

जैसे-जैसे समय निकट आया, यीशु निश्चयपूर्वक यरूशलेम के लिए निकले

लूका ९:५१-५६ और यूहन्ना ७:१०

खोदना: मसीहा के यरूशलेम के लिए प्रस्थान में देरी क्यों हुई? आपको क्या लगता है कि प्रभु ने पवित्र शहर की यात्रा के सामान्य तरीके से बचना क्यों चुना? अच्छे चरवाहे का मंत्रालय में सुकोट का त्यौहार एक महत्वपूर्ण मोड़ क्यों था? तानाख के किस भविष्यवक्ता ने इस घटना की भविष्यवाणी की थी? सबसे सीधा मार्ग कौन सा था? क्या हुआ? उसके दो प्रेरितों ने कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की? उन्होंने कौन सा रास्ता अपनाया? अंतिम परिणाम क्या था?

चिंतन: क्या आप यीशु को अपने जीवन में उस समय कार्य करने देना चाहते हैं जब वह तैयार हो और जिस तरीके से वह चुनता है? जब आप किसी मुकदमे के बीच में होते हैं तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होती है? आप आध्यात्मिक समायोजन करने में कितने अच्छे हैं? क्या आप अपने तरीकों में “अटक गए” हैं? आपको क्यों बदलना चाहिए? कैसे? कब? आप उन अविश्वासियों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं जो असभ्य और शत्रुतापूर्ण हैं?

मसीहा के सौतेले भाइयों के त्योहार के लिए चले जाने के बाद, वह भी सार्वजनिक रूप से नहीं, बल्कि गुप्त रूप से गया (यूहन्ना ७:१०)। उनके येरुशलम रवाना होने में देरी हो रही है। उसने तब तक इंतजार किया जब तक कि उसके सौतेले भाई पहले ही नहीं चले गए (देखें Gj– यहां तक कि यीशु के भाइयों ने भी उस पर विश्वास नहीं किया)। यीशु हर स्थिति का स्वामी है। तो अब वह पवित्र शहर में जाता है जब वह तैयार होता है, और जिस तरीके से वह चुनता है। जब युहन्ना कहता है कि मसीह सार्वजनिक रूप से और गुप्त रूप से ऊपर नहीं गया था, तो उसका मतलब है कि प्रभु तीर्थयात्रियों के कारवां के साथ येरुशलेम तक नहीं गए थे। हम उस घटना से देख सकते हैं कि ऐसा समूह कितना बड़ा हो सकता है जब यीशु बारह वर्ष के थे (देखें Ba– मंदिर में लड़का यीशु)। ऐसी कंपनी में यात्रा करने से अधिक सार्वजनिक कुछ नहीं हो सकता। येशुआ ने यात्रा के ऐसे विशिष्ट तरीके से परहेज किया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि किसी ने उसे नहीं देखा जैसा कि हम अपनी अगली फ़ाइल में देखेंगे।

Gk – जैसे-जैसे समय निकट आया, यीशु निश्चयपूर्वक यरूशलेम के
लिए निकले लूका ९:५१-५६ और यूहन्ना ७:१० | 2



सुक्कोट का त्योहार येशुआ हा-माशियाच के जीवन और
मंत्रालय में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। वह इस बात से पूरी तरह सचेत था कि दाऊद के शहर में उसका क्या इंतजार है। अब येशुआ ने धार्मिक नेताओं के विरोध का सामना करने के लिए अपना चेहरा स्वर्गीय शहर की ओर कर लिया, जिसकी परिणति उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान में होगी। जैसे ही उसे स्वर्ग में ले जाए जाने का समय नजदीक आया, यीशु ने तमाम कठिनाई और खतरे के बावजूद दृढ़तापूर्वक येरूशलेम के लिए प्रस्थान किया (लूका ९:५१)। यीशु ने त्ज़ियोन की कई यात्राएँ कीं, लेकिन लुका ने अपनी बात समझाने के लिए उन्हें दूरबीन से देखा कि प्रभु को खुद को मसीहा के रूप में प्रस्तुत करने के लिए पवित्र शहर में जाना होगा।920 इसलिए, उन्होंने यरूशलेम के लिए अपना चेहरा चकमक पत्थर की तरह रखा (यशायाह पर मेरी टिप्पणी देखें Ir– क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है, मैं अपना मुख चकमक पत्थर के समान करूंगा)। मसीह को एहसास हुआ कि स्वर्ग में उनका स्वागत करने से पहले यह उनका बूथों का आखिरी त्योहार होगा। सुक्कोट का त्योहार उनके जीवन के अंतिम छह महीनों को चिह्नित करता है।

यीशु ने गलील से दाऊद के शहर तक सीधा मार्ग अपनाया जो उसे सामरिया से होकर ले जाएगा। और गलीली रब्बी ने आगे दूत भेजे, जो सामरी गांव में उसके लिये वस्तुएं तैयार करने को गए; परन्तु वहां के लोगों ने उसका स्वागत न किया, क्योंकि वह सिय्योन की ओर दक्षिण की ओर जा रहा था (लूका ९:५२-५३)। वह पहले भी एक बार सामरिया से होकर जा चुका था लेकिन वह उत्तर की ओर यात्रा कर रहा था (देखें Ca– यीशु एक सामरी महिला से बात करता है)। सामरियों को यहूदियों के यरूशलेम से दूर जाने से कोई परेशानी नहीं थी, लेकिन वे नहीं चाहते थे कि सामरिया दक्षिण की ओर जाने वाले यहूदियों के लिए एक मुख्य मार्ग बने क्योंकि वे यरूशलेम को एक पवित्र शहर नहीं मानते थे। वे इज़राइल के उत्तरी राज्य में माउंट गेरिज़िम को एकमात्र पवित्र शहर मानते थे। जोसेफस के अनुसार यहूदियों की पुरातनता में, सामरी लोगों को येरुशलायिम के रास्ते में सामरिया से गुजरने वाले यहूदियों को मारने के लिए जाना जाता था।

Gk – जैसे-जैसे समय निकट आया, यीशु निश्चयपूर्वक यरूशलेम के
लिए निकले लूका ९:५१-५६ और यूहन्ना ७:१० | 3

याकूब और युहन्ना, वज्र के पुत्र, क्रोधित हो गए और इस तरह की अस्वीकृति को न्याय के योग्य माना जब उन्होंने पूछा: प्रभु, क्या आप चाहते हैं कि हम उन्हें नष्ट करने के लिए स्वर्ग से आग बुलाएं (लूका ९:५४)? वे हाल ही में परिवर्तन के पर्वत पर मसीहा के साथ थे (देखें Gb– यीशु पतरस, याकूब और युहन्ना को एक ऊंचे पर्वत पर ले गए जहां उनका रूपांतर हुआ था) और उन्होंने एलिजा, भविष्यवक्ता को देखा था जिन्होंने एक बार कार्मेल पर्वत पर स्वर्ग से आग बुलाई थी । इसके अलावा, येशुआ ने हाल के गैलीलियन अभियान में उन्हें अद्भुत शक्तियाँ दी थीं। उन्हें यह विश्वास करने के लिए कल्पना की एक बड़ी छलांग की आवश्यकता नहीं थी कि घृणित सामरियों के इस दुर्गम गांव को नष्ट करने के लिए आग को बुलाना, जिन्होंने अपने स्वामी को अपमानित करने का साहस किया था, सवाल से बाहर था।

चाहे उनका अनुरोध कितना भी गलत क्यों न हो, उनका निष्कर्ष सत्य था। जिन्होंने पापियों के उद्धारकर्ता को अस्वीकार कर दिया, उनका न्याय किया जाना था। लेकिन फैसले का वक्त अभी नहीं आया था । अत: मसीह ने पलट कर उन्हें डांटा। फिर रात बिताने के लिए वह और उसके साथी दूसरे गाँव में चले गए, शायद पेरिया में जॉर्डन नदी के पार (लूका ९:५५-५६)। डेविड शहर जाने के लिए गैलीलियन यहूदियों का सामान्य मार्ग जॉर्डन नदी के पूर्वी किनारे पर था। इस सड़क पर कम यात्रा करनी पड़ेगी क्योंकि सुक्कोट का त्योहार पहले ही शुरू हो चुका है, और यह सामरी लोगों के साथ किसी भी अन्य संघर्ष से भी राहत देगा। सामरिया की यात्रा में सामान्यतः लगभग तीन दिन लगेंगे। परन्तु चूँकि वहाँ पहुँचने में अधिक समय लगा, इसलिए यीशु सप्ताह के मध्य तक यरूशलेम नहीं पहुँचे। उत्सव के आधे समय तक यीशु मंदिर के दरबार में नहीं गए और शिक्षा देना शुरू नहीं किया (यूहन्ना ७:१४)।